अथ शन्यष्टोत्तर शतनाम स्तोत्रं

शनैश्चराय शांताय सर्वाभीष्ट प्रदायिने। शरण्याय वरेण्याय सर्वेशाय नमो नमः॥ सौम्याय सुरवंद्याय सुरलोक विहारिणे। सुखासनोपविष्टाय सुंदराय नमो नमः॥ घनाय घनरूपाय घनाभरण धारिणे। घनसार विलेपाय खद्योताय नमो नमः। मंदाय मंदचेष्टाय महनीय गुणात्माने। मर्त्यपावन पादाय महेशाय नमो नमः। छायापुत्राय शर्वाय शरतूणीर धारिणे। चरस्थिर स्वभावाय चंचलाय नमो नमः॥ नीलवर्णाय नित्याय नीलांजन निभाय च। नीलांबर विभूषणाय निश्चलाय नमो नमः। वेद्याय विधिरूपाय विरोधा धारभूमये। वैरास्वद स्वभावाय वज्रदेहायते नमः॥ वैराग्यदाय वीराय वीतरोग भयाय च। विपत्वरंपरेशाय विश्ववंद्याय ते नमः॥ गृध्रवाहनाय गूढाय कूर्मांगाय कुरूपिणे । कुत्सिताय गुणाढ्याय गोचराय नमो नमः। अविद्यामूल नाशनाय विद्याविद्या स्वरूपिणे। आयुष्य कारणाय आपदुद्धर्त्रे च नमो नमः। विष्णु भक्ताय वशिने विविधागम वेदिने। विधिस्तुत्याय विरूपाक्षायते नमः॥ वरिष्ठाय गरिष्ठाय वज्रांकुश धराय च। वरदाभयहस्ताय वामनाय नमो नमः॥ ज्येष्ठापत्नी समेताय श्रेष्ठायामितभाषिणे। कष्टौघ नाशनाय आर्यपुष्टिदाय नमो नमः॥ स्तुत्याय स्तोत्रगम्याय भक्तिवश्याय भानवे। भानुपुत्राय भव्याय पावनाय नमो नमः॥ धनुर्मंडल संस्थाय धनदाय धनुष्मते। तनुप्रकाश देहाय तामसाय नमो नमः॥ अशेषजनवंद्याय विशेषफलदायिने। वशीकृतजनेशाय पशूनांपतये नमः॥ खेचराय खगेशाय घननीलांबराय च। काठिन्यमानसाय आर्यगणस्तुत्याय ते नमः। नीलच्छत्राय नित्याय निर्गुणाय गुणात्मने। निरामयाय निंद्याय वंदनीयाय ते नमः॥ धीराय दिव्यदेहाय दीनार्तिहरणाय च। दैत्यनाशकराय आर्यजनगण्याय ते नमः॥ क्रूराय क्रूरचेष्टाय कामक्रोध धराय च। कळत्रपुत्र शत्रुत्वकारणाय नमो नमः॥ परिपोषितभक्ताय वरभीतिहराय च। भक्तसंघ मनोभीष्टफलदाय नमो नमः॥ इति शन्यष्टोत्तर शतनाम स्तोत्रं॥

For Qualitative Predictions & Potential Remedies visit:
www.astrovidya.com